डॉ० मो० शाहनवाज़ रिज़वी

# चंदा मामा की दुकान

जब रात उतरती चुपके-चुपके,
आसमान पर चाँद झलकता है,
सितारे हँसते, टिमटिमाते,
जैसे कोई मेला सजता है।

वहीं कहीं इक कोने में
खुलती है छोटी-सी दुकान —
चाँद मामा की दुकान,
जहाँ बिकते हैं सपनों के सामान।

मामा की थैली में भरे हैं —
हँसी, उजाला, मीठे गीत,
थोड़े रंग, थोड़ी रौशनी,
और कुछ प्यारे नन्हे प्रीत।

पहले आया ध्रुव तारा,
बोला — "मामा, उजाला दो ज़रा!"
मामा बोले — "ले बेटा, पर देना हँसी
का प्याला ज़रा।"

फिर आया बादल मस्ती में,
हवा के संग झूमता हुआ,
बोला — "मामा, दो थोड़ा रंग,
बारिश में इंद्रधनुष बुनूँगा।"

मामा मुस्कुराए — "रंग तो सूरज
लाता है,
सुबह जब किरणें फैलाता है।"
बादल बोला — "अच्छा मामा,
कल फिर आऊँ, गाना सुनाऊँ।"

तभी नन्ही चिड़िया आई,
नींद में गुनगुन गाती हुई,
लोरी लेकर आई प्यारी,
बच्चों को सुलाती हुई।
मामा ने टोकरियाँ खोलीं,
लोरियों की खुशबू फैलाई,
कहा — "ले लो बच्चे प्यारे,
सपनों में जाओ मुस्कुराते हुए सारे।"

फिर नन्ही परी उड़ती आई,
हाथ में छोटी टोकरी लाई,
उसमें थे सपनों के फूल,
जो हँसते थे, महकते थे, और कहते थे
"हर बच्चा है फूल अनमोल,
जिससे जग में आता है बोल।"

नीचे से धरती बोली —
"मामा, कुछ मेरे लिए भी?"
मामा बोले — "तेरे बच्चों को दूँगा,
थोड़ी नींद और हँसी।"

धीरे-धीरे रात गहराई,
तारे झपक-झपक मुस्काए,
मामा बोले — "अब बंद करूँ दुकान,
कल फिर सबको बुलाए।"

बच्चों ने नींद में देखा सपना,
चाँद मामा मुस्कुरा रहे थे —
हाथ हिलाकर कह रहे थे —
"ख़्वाब सजा लो प्यारे बच्चो,
सुबह को फिर चमका दो!"